

Padma Shri



SMT. BIJOYA CHAKRAVORTY

Smt. Bijoya Chakravorty was a teacher in Mangaldai college, Assam and a pioneer in developing teacher student relationship. She was Vice President of Assam T.T. Association and developed sports among youth in the rural area. As a fourth time M.P and one term minister, she worked very hard and her work is visible in different parts of the country.

2. Born on 7th October, 1939, Smt. Bijoya was famous for athletic events with record breaking skills. In the literary field she was founder general secretary of "Assam Mahila Samaroh Samity" and worked hard to develop literary skills among women.

3. Smt. Bijoya, as a President of Zila Manila Samity, travelled nook and corner of Assam to encourage women to come out to join social field. Along with women development activity she worked for children too as a Vice President of premier children organization "Assam Maina Parijat". Many a time she had to embrace jail life during language movement. She spent nearly 2 years in jail during the famous "Assam movement" in 1979 to 1984 and was thrown in deep jungle at Bhalopung, Assam, infested with wild elephant and tiger. Presently she is working for distressed children and women through the NGO "Hello Ma".

4. Smt. Bijoya is a source of inspiration because of her indomitable courage and work strength. She is fondly called "Baideo" (big sister) in Assam.



श्रीमती बिजया चक्रवर्ती

श्रीमती बिजया चक्रवर्ती मंगलदाई कॉलेज, असम में एक अध्यापिका थीं और उन्होंने शिक्षक-विद्यार्थी संबंध विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभाई। वह असम टी.टी. एसोसिएशन की वाइस प्रेसीडेंट रहीं और उन्होंने गांवों के युवाओं के बीच खेलों को लोकप्रिय बनाया। चार बार सांसद और एक बार मंत्री रहते हुए उन्होंने कड़ी मेहनत की और उनका काम देश के विभिन्न भागों में नजर आता है।

2. 7 अक्टूबर, 1939 को जन्मी श्रीमती बिजया रिकॉर्ड तोड़ कौशल के साथ एथलेटिक कार्यक्रमों के लिए मशहूर थीं। साहित्य के क्षेत्र में वह 'असम महिला समारोह समिति' की संस्थापक महासचिव थीं और उन्होंने महिलाओं में साहित्यिक कौशल विकसित करने के लिए खूब मेहनत की।

3. श्रीमती बिजया ने जिला महिला समिति की अध्यक्ष के रूप में असम के कोने-कोने में घूमकर महिलाओं को सामाजिक क्षेत्र में आने के लिए प्रोत्साहित किया। महिला विकास से जुड़े कार्यों के अलावा, उन्होंने प्रमुख बाल संगठन 'असम मैना पारिजात' की उपाध्यक्ष के रूप में बच्चों के लिए भी काम किया। भाषा आंदोलन के दौरान उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। 1979 से लेकर 1984 तक प्रसिद्ध 'असम आंदोलन' के दौरान उन्हें करीब 2 साल जेल में बिताने पड़े और उन्हें भालोपुंग, असम में जंगली हाथी तथा बाघ से भरे हुए घने जंगल में फेंक दिया गया। वर्तमान में वह एनजीओ 'हैलो मां' के जरिए पीड़ित बच्चों और महिलाओं के लिए काम कर रही हैं।

4. अपने अदम्य साहस और कार्य क्षमता के कारण श्रीमती बिजया एक प्रेरणास्रोत हैं। उन्हें असम में प्यार से 'बाइदेओ' (यानी बड़ी बहन) बुलाया जाता है।